अतिसंग्रह का त्याग

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

अतिसंग्रह का अर्थ है आवश्यकता से अधिक संग्रह करना। आवश्यकता से अधिक संग्रह करना हानिकारक है। समाज में सबको कुछ न कुछ और किसी न किसी वस्तु की आवश्यकता होती है। रोटी, कपड़ा, मकान, चिकित्सा और शिक्षा की सबको आवश्यकता होती है। इसकी पूर्ति के लिए संग्रह की आवश्यकता होती है। इसलिए संग्रह करना चाहिए। किन्तु इतना संग्रह नहीं करना चाहिए कि संग्रह लालसा को जन्म दें। लालसा के कारण इच्छाएं बढ़ती है सभी इच्छाओं की पूर्ति सम्भव नहीं है। अति संग्रह करने के लिए मनुष्य अनुचित तरीकों को अपनाता है। दूसरों का शोषण किया जाता है और दूसरे के हक को छीना जाता है, तभी अतिसंग्रह किया जा सकता है। शरीर की आवश्यकता, परिवार की आवश्यकता और बच्चों की पढ़ाई–लिखाई के लिए जो संग्रह करता है वह तो उसकी आवश्यकता है। किन्तु जब इतना अधिक संग्रह कर लिया जाये कि दूसरे को कुछ मिले ही न तो यह अतिसंग्रह कहलता है। सबको विकास का समान अवसर मिलना चाहिए। अतिसंग्रह प्रसन्नता को नष्ट कर देता है। मनुष्य यदि अपना पूरा समय अतिसंग्रह में लगा देगा तो भीतरी जगत में हम जा ही नहीं पाएगें। मनुष्य को जीवनयापन करने के लिए एक मकान की आवश्यकता होती है। यदि हम अनुचित तरीके से दस मकान और दस दुकान बना लेते हैं तो दूसरों को क्या मिलेगा। इससे समाज में असमानता पैदा होगी। गरीब और अमीर की खाई बढ़ती जाएगी। आज समाज में एक और किसी उत्सव में भोजन इतना अधिक बन जाता है कि उसको फेंकना पड़ता है तो वहीं दूसरी ओर कुछ लोग बिना खाए सो जाते हैं। ऐसा इसलिए है कि कुछ लोग समाज में बहुत सम्पन्न है तो दूसरी ओर कुछ लोग बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति भी नहीं कर पाते। लोभी व्यक्ति को यदि पूरे संसार की सम्पत्ति दे दी जाए तो भी वह संतुष्ट नहीं रह सकता। मनुष्य में जब तक संतोष रूपी धन नहीं आ जाये तब तक उसके लिए सब कुछ बेकार है। संतोष ही मानव का सबसे बड़ा धन है।

जीवन को आराम से चलाने के लिए वस्तुओं की आवश्यकता होती है। मानव की इच्छापूर्ति न होने से वह अशांत हो जाता है। अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में सम रहने से मानव शांति प्राप्त करता है। लोभी व्यक्ति अतिसंग्रह करता है। अतिसंग्रह करने से दूसरे व्यक्ति का हक छीना जाता है। दूसरों के अंश को छीनना, दूसरों को वंचित करना आदि कार्य अतिसंग्रह के कारण होते हैं। अतिसंग्रह करने से वस्तुओं की कमी होती है। इससे समाज में तनाव और अशांति पैदा होती है। अधिक धन की सुरक्षा करना भी यह कठिन कार्य है। अतिसंग्रह करने से ऊंची–ऊची कई अटालिकाएं बनाकर उसकी सुरक्षा करना कठिन कार्य है। आज कहीं–कहीं ऊंची–ऊंची अटलिकाएं है तो दूसरी तरफ घासफूस की टूटी–फूटी झोंपड़ी दिखाई देती है। जब गरीब का खून चूसा जाता है तभी कोई व्यक्ति अतिसंग्रह कर सकता है। व्यक्ति को संतोष धारण करना चाहिए। संतोषरूपी धन प्राप्त हो जाने पर अन्य सभी धन धूली के समान प्रतीत होने लगते हैं। अतिसंग्रह करने वाला व्यक्ति बंधन में फंसता है। लालच के घेरे से ऐसा व्यक्ति निकल ही नहीं पाता। उसके परिवार में भी संतुलन बिगड़ जाता है। धन के ऊपर सभी की निगाहें लगी रहती हैं। धन के बटवारें को लेकर भाईयों–भाईयों में कलह छिड़ जाती है। कलुषित मनोवृत्ति लोभ के कारण होती है। लोभ के कारण आसक्ति उत्पन्न होती है। मोह का वटवृक्ष बहुत बड़ा है। अच्छाईयां गुणों का परिवार है और बुराईयां मोह का परिवार है। धन कुछ है सबकुछ नहीं। धन एक साधन है साध्य नहीं। नियम कानून का पालन करते हुए संग्रह करना चाहिए। परिग्रह एक भावना है। परिग्रह का अर्थ है। चारों तरफ से ग्रहण करना। अपरिग्रह इसका विपरीत है। अपरिग्रह में आवश्यकता से अधिक नहीं ग्रहण किया जाता। अतिसंग्रह करना अशांति का कारण होता है। सही तरीके से अर्जित किया गया धन परिवार, समाज और राष्ट्र की सुरक्षा कर सकता है।

अर्जन और विसर्जन संतुलन का सूत्र है। अर्जन का अर्थ है कुछ कमाना और विसर्जन का अर्थ है जो कमाया गया है उसका कुछ अंश दान में देना। मानव जीवन से लेकर प्रकृति पर्यन्त यह नियम लागू रहता है। सृष्टि में भी यह संतुलन दिखायी देता है। सम्पूर्ण सृष्टि संतुलन के आधार पर चल रही है। अगर संतुलन गड़बड़ा जाये तो जीवन में या सृष्टि में असंतुलन आजाता है। सृष्टि के असंतुलन का अर्थ है भूकम्प आजाना, सुनामी आजाना और

प्रकृति का प्रकोप हो जाना। इसके अनके कारण है। मानव प्रकृति का अंधाधुंध दोहन कर रहा है। वृक्ष कटते हुए चले जा रहे हैं। उनके स्थान पर नये वृक्षों का रोपण नहीं हो रहा है, जिससे प्रकृति में असंतुलन दिखलाई दे रहा है। अगर यही प्रक्रिया जारी रही तो मानव जीवन दूभर हो जायेगा। आवश्यकता से अधिक अर्जन दूसरों के हिस्से पर अधिकार करना है। यदि साधन सम्पन्न व्यक्ति अधिक अर्जन करता रहेगा तो समाज में गरीबी बढ़ेगी, लूट, खसोट, भ्रष्टाचार, दुराचार बढ़ेगा। इससे समाज में अराजकता फैलेगी। इसलिए अतिसंग्रह का त्याग करके उचित तरीके से जो कुछ भी अर्जन हो जाए वह श्रेयष्कर है।